20. दादी जी के महावाक्य

अब हम ब्राह्मणों की वह अवस्था चाहिए कि 'पाना था जो पा लिया...।' जब हम इस स्थिति में पहुँच जाते हैं तो माँगना समाप्त हो जाता है। बाप से बच्चों को माँगने की दरकार नहीं रहती। वह आपे ही देता है। बाबा कई बार हम बच्चों को अमृतवेले का रमणीक दृश्य सुनाते कि सवेरे–सवेरे बच्चे बाप से क्या माँगते हैं, क्या–क्या उलहनें देते हैं। अगर साक्षी होकर देखो तो आपको भी मजा आयेगा। साथ–साथ बाबा यह भी कहते, बच्चे तुम्हें जो भी प्राप्ति करनी है, जिस भी संबंध का रस लेना है वह अमृतवेले बाप से ले सकते हो, क्योंकि उस समय बाप भोलानाथ के रूप में होते हैं। यह किन के लिए कहा? जिन बच्चों को बाबा देखता यह तृप्त नहीं है तो बुद्धि औरों में न जाये इसलिए कहता मेरे से ही लो। लेकिन माँगना ब्राह्मणों का धर्म नहीं। यह तो भक्ति के संस्कार है।

अगर आप धरनी पर खड़े हो बाबा को आकाश से ऊपर देखते तो सवाल आता हम नीचे हैं, आप ऊपर हैं। हम आपके पास कैसे पहुँचे! परन्तु जब बुद्धि धरनी से ही ऊपर चली जाती है तो ऊपर जायेगी ही बाबा के पास। जब साथ बैठे होंगे तो आकाश में उड़ने वाले धरनी की चीजें क्या माँगेंगे? धरनी वाले शक्ति माँगते, लाइट माँगते, मदद माँगते...। बाबा के बोल हैं, बच्चे, तुम मेरे से माँगते क्यों हो? कहा जाता है सहज मिले सो दूध बराबर...। जब स्वयं ज्ञान सागर बाप हमें क्षीर की दुनिया में ले चलता है फिर उस ऊँचे से ऊँच बाप को मनुष्य क्यों बुलाते हो?

जब कोई तबीयत के कारण या कोई कमी के कारण डिस्टर्ब होकर कहते हैं, हे बाबा, ओ बाबा... तो बाबा के महावाक्य हैं तुम तो भगवान के बच्चे हो। तुम्हारे मुख से कभी भी हाय–हाय नहीं निकल सकता। बाप हम बच्चों के यह हाय–हाय के बोल सुन नहीं सकते। जब बाप और ड्रामा में निश्चय है तो फिर हाय–हाय के बोल मुख से क्यों निकलते हैं? हे बाबा, कहना भी हमारी पुकार के बोल हैं। पुकार का बोल भक्ति का, प्रार्थना का, माँगने का है। यह शक्तिहीन शब्द है। बाबा ने हमारे सब पुराने संस्कार मिटाये हैं इसलिए बाबा को यह शब्द पसन्द नहीं हैं।

ओम् शांति।